मन की पवित्रता से सर्व सुखों की प्राप्ति

जिस तरह से गर्भ से पैदा हुआ बच्चा पवित्र अर्थात महात्मा समान होता है उसी तरह से मनुष्य के शैशवाकाल में शरीर की पथगामिनी आत्मा की शक्ति मन भी पवित्र होता है।इसलिए उस समय के दौरान बच्चों को अपना-पराया और अच्छे बुरे का ज्ञान नही होता है। यदि बच्चा गलती भी कर बैठता है तो उसे यह कहकर माफ कर दिया जाता है यह अबोध बच्चा है। उसी तरह से मन पर भी यही प्रक्रिया मन पर लागू होता है। मन एक पारदर्शी दर्पण है जिसमें अपने पूरे व्यक्तित्व को उसमें देखा जा सकता है। मन की पवित्रता ही सर्वश्रेष्ठ पवित्रता है। मन की पवित्रता से सम्पूर्ण शरीर की पवित्रता सम्भव है। अधिकतर लोग शरीर को पवित्र बनाने के बारे में सोचते रहते है, परन्तु मन की पवित्रता के बारे में सोचते भी नहीं है। वास्तव में मन की पवित्रता से दैनिक दिनचर्या में होने वाले कर्मों में भी पारदर्शिता और पवित्रता की झलक साफ दिखाई देती है। सफलता और असफलता काफी हद तक मन की स्थिति पर निर्भर होता है। भगवान ने भी गीता में कहा है कि जो व्यक्ति मन से पवित्र और निश्छल होता है वही मुझे प्रिय है। इसीलिए अपने स्मरण और प्राप्ति के सम्बन्ध में 'मनमनाभव' के मन्त्र को ही सर्वश्रेष्ठ याद की विधि बताया है। क्योंकि जब तक हमारा मन पवित्र नहीं होगा ईश्वरीय याद और परमात्मा की मदद नहीं ले सकते, मुक्ति और जीवनमुक्ति की बात तो दूर है।

मन के सन्दर्भ के बारे में अपने विद्वानों द्वारा अनेक बातें कही गयी है। किसी ने मन को घोड़ा के समान चंचल बताया है तो किसी ने मन को शैतान तक कह दिया है। किसी ने मन को बच्चे की भांति बताया है। परन्तु मन आत्मा की तीन शक्तियों मन, बुद्धि और संस्कार में से एक है। यह मन तभी कार्य करता है जब आत्मा शरीर धारण किये रहती है। मन का कार्य निरंतर सोचते रहना है । 24 घंटे के दौरान अपने भूत-भविष्य और वर्तमान के बारे में सोचना मन का कार्य है। सोच में अच्छा और बुरा दोनों हो सकता है, परन्तु अच्छे और बुरे का निर्णय बुद्धि करती है फिर कर्म होता है। और कर्मों के परिणाम से ही दु:ख सुख, पाप, पुण्य, यश, अपयश की प्राप्ति होती है जिससे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। आत्मा को शरीर छोड़ने के बाद भी यदि याद किया जाता है तो सिर्फ उसके कर्मों के फल के आधार पर। जब मन पवित्र हो जाता है तो उसके गर्भ में उठने वाले संकल्प, सोच, कल्याणकारी, परोपकारी और सफलतामूर्त होते है। उसमें वसुधैव कुटुम्बकम की भावना समाहित होती है। सारी दुनियां अपनी लगने लगती है। फिर वह ईश्वर को प्रिय तो होता ही है, वरन उसके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाले लोग भी उससे प्रभावित होते है।

कहा जाता है कि मन के हारे हार और मन के जीते जीत। अर्थात जो मन से हार जाता है उसका अपना भी पराया हो जाता है और जो मन पर पूर्ण विजय प्राप्त कर लेता है उसके लिए संसार की कोई भी वस्तु अप्राप्त नहीं होती है। मन की पवित्रता से ही मनुष्य अपने मन को एकाग्र कर सर्व कमेन्द्रियों पर विजय प्राप्त करता है। मन की एकाग्रता और पवित्रता से परमात्मा से लिंक जुट जाता है और उसके द्वारा प्रवाहित शक्तियों का अधिकारी बन जाता है। और धीरे-धीरे आत्मा के सातों गुण जागृत होने लगते है। उनके अन्दर दैवी गुणों का समावेश होने लगता है और वह देवत्व स्थिति को प्राप्त करता है। उससे सुखी तथा उससे धनी दुनियां में कोई भी व्यक्ति नहीं होता है। प्राय: योगियो, तपस्वियों और साधकों, ऋषियो और महाऋषियों को अपने कमेन्द्रियों को वश में करने तथा ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अपने मन की

पवित्रता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

मन को प्रभावित करने वाले अनेक कारक उत्तरदायी होते है। संग-दोष, खान-पान, रहन-सहन, तथा वातावरण का मन: स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा पिछले जन्म के कर्म इसे प्रभावित करते है। इसके लिए अपने भूत, भविष्य और कर्मों की गहन गति का ज्ञान होना अति आवश्यक है। जब भी हमारे मन में नकारात्मक संकल्प चले तो उससे सकारात्मक संकल्पों में परिवर्तन करते रहना चाहिए जिससे मन को सकरात्मक संकल्प करने की आदत पड़ जाये और उसमें सकारात्मक संकल्पों की ही उत्पत्ति हो सके। मन के पवित्रता को बारीकी से समझकर उसके महत्वों को भी समझना चाहिए। किसी के प्रति अशुभ सोचना, व्यर्थ सोचना, नकारात्मक सोचना आदि भी अपवित्रता की श्रेणी में आता है। ऐसी वृत्ति से न केवल हम दूसरों को कष्ट पहुँचाते है बल्कि हमारे उपर भी उसका प्रभाव पड़ता है। साधक को इससे सावधान रखना चाहिए। दृष्टि, वृत्ति, भाव और भावना मन की उपज है। जब मन में स्वच्छता और पवित्रता होगी तभी उससे नवोदित सोच और विचार श्रेष्ठ और कल्याणकारी होंगे। जहाँ पवित्रता का वर्चस्व होता है वहाँ पर लक्ष्मी का निवास होता है। इसलिए मन में स्वच्छता और पवित्रता होने से आर्थिक और भौतिक सुख की भी प्राप्ति होती है। अतिन्द्रिय सुख और शान्ति ही इसका उदगम स्थल है।

कैसे रखे मन को पवित्र: मन एक स्वछन्द घोड़े की भांति संसार सागर में विचरण करना चाहता है क्योंकि उसका स्वभाव ही है निरन्तर संकल्पों की उत्पत्ति करते रहना। इसलिए इस तीब्रगामी मन को रोका, मारा अथवा बांधकर नहीं रखा जा सकता है। परन्तु इसे एक दिशा प्रदान किया जा सकता है। एक शुद्ध प्रेम, शान्ति और अतिन्द्रिय सुख की दरिया मे जाने का अभ्यासी बन जाने से वह व्यर्थ और नकारात्मक संसार से मुक्ति पा लेगा और वह 'स्व' तथा परमात्मा संसार की दरिया में गोते खाते रहने से उसके अन्दर परमात्म शक्तियां, गुण और स्वधर्म उसके अपने स्वभाव में बदल जाते है। जिससे वह सदैव सदमार्ग और सदकर्मो के तरफ ही रूख करता रहेगा। परमात्मा शिव का संसार विशाल और अनन्त है। इस सागर में संसार के सर्व सुख निहित है। इसके लिए परमात्मा ने सिर्फ एक सहज विधि बतायी है कि तुम मुझसे दोस्ती कर लो और अपने मन को मेरे में लगाओ तो तुम्हारे मन को पवित्र बनाना मेरी जिम्मेवारी है। इसलिए परमात्मा के इन वादों को अमल लाते हुए अपने मन को परमात्मा शिव को अर्पण कर देना चाहिए जिससे मन पवित्र हो जायेगा और परमात्मा साथ का अनुभव, परमात्म मिलन के साथ-साथ सर्व सुखों और सर्व शक्तियों के अधिकारी बन जायेंगे।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com